

बौद्ध जगत के लिए प्रार्थना मार्गदर्शिका

बौद्ध लोगों के लिए 7 दिन की प्रार्थना में हमारे
साथ जुड़ें

25-31 जनवरी 2027



बौद्ध लोगों के लिए विश्व प्रार्थना दिवस

आज 24 घंटे की संयुक्त प्रार्थना के लिए ऑनलाइन हमारे साथ जुड़ें, या अपने स्थानीय समुदाय में छोटे समूहों में इकट्ठा हों। जब हम एक मन होकर प्रार्थना में इकट्ठा होते हैं, तो उसमें सामर्थ्य होती है। हम आपको यह भी निमंत्रण देते हैं कि आप ऐसे पाँच लोगों के लिए नाम लेकर प्रार्थना करें जिन्हें आप जानते हैं और जिन्हें यीशु की आवश्यकता है।

एकता में 24 घंटे की
ऑनलाइन प्रार्थना में
जुड़ें

31 जनवरी को यहाँ क्लिक करें

6 कदम

इस मार्गदर्शिका का उपयोग कैसे करें

प्रभावशाली प्रार्थना के लिए

राज्य के दृष्टान्त | वास्तविक लोग | स्थायी आंदोलन



विषय से आरंभ करें।

हर दिन का राज्य का दृष्टान्त तय करें कि आप कैसे पढ़ते, प्रार्थना करते और प्रतिक्रिया देते हैं।



वचन में जड़ पकड़ें।

दृष्टान्त को ध्यान से पढ़ते हुए पवित्र आत्मा से माँगें कि वह उसे आपके लिए व्यक्तिगत बनाए, ताकि कुछ और करने से पहले वह आपकी मध्यस्थता की प्रार्थना को दिशा दे।



कहानी पढ़ें।

हर गवाही अग्रिम मोर्चे से आया समाचार है। यह बौद्ध जगत के किसी विश्वासी या आंदोलन से आती है। परमेश्वर का धन्यवाद करें और और भी बड़ी सफलता माँगें।



केंद्रित प्रार्थना करें।

जल्दबाज़ी न करें। प्रार्थना विषयों को वास्तविक लोगों, वास्तविक शहरों और वास्तविक आंदोलनों के लिए मध्यस्थता के निमंत्रण के रूप में लें।



प्रश्न का उत्तर दें।

रूकें और लागू करने वाले प्रश्न पर ध्यान से विचार करें। प्रभु से पूछें कि इस दृष्टान्त के प्रकाश में वह आपसे कैसे प्रेम करना, कार्य करना, आज्ञा मानना या देना चाहता है।



आराधना से समाप्त करें।

समाप्त करते हुए यीशु की स्तुति करें।



बौद्ध धर्म की शुरुआत कैसे हुई

सिद्धार्थ गौतम की कहानी

और बुद्ध की शिक्षाएँ

सिद्धार्थ गौतम की कहानी

सिद्धार्थ गौतम का जन्म ईसा पूर्व छठी शताब्दी में आज के नेपाल के दक्षिणी क्षेत्र में हुआ था। बौद्ध परंपरा के अनुसार, एक साधु ने भविष्यवाणी की थी कि यह युवा राजकुमार एक दिन या तो एक शक्तिशाली शासक बनेगा या आत्मिक रूप से जागृत गुरु। उसे हर कठिनाई से बचाने के लिए सिद्धार्थ के पिता ने उसे धन, सुख और विशेषाधिकारों से घेर दिया, और दुःख की सच्चाई को अपने पुत्र के संसार से दूर रखा।

परन्तु उनतीस वर्ष की आयु में सिद्धार्थ महल की दीवारों से बाहर निकला और उसने वह देखा जो उसके सुरक्षित जीवन ने उससे छिपा रखा था: बीमारी, बुढ़ापा और मृत्यु। जो कुछ उसने देखा उससे गहराई से विचलित होकर उसने अपना पद, परिवार और आरामदायक जीवन छोड़ दिया, ताकि मनुष्य के दुःख का उत्तर खोज सके।

अगले छह वर्षों तक सिद्धार्थ एक भ्रमणशील तपस्वी के रूप में रहा। उसने कठोर आत्म-त्याग अपनाया और स्वयं को ध्यान में लगा दिया। फिर भी इन कठोर साधनाओं के बावजूद उसे उस दुःख का कोई स्थायी समाधान नहीं मिला जिस पर वह विजय पाना चाहता था।

परंपरा के अनुसार, अंततः सिद्धार्थ आज के गया, भारत के पास एक बोधि वृक्ष के नीचे बैठ गया और ठान लिया कि जब तक उसे ज्ञान प्राप्त न हो, वह नहीं उठेगा। प्रलोभन और भटकाव के बीच डटे रहने के बाद उसने विश्वास किया कि उसने परम सत्य खोज लिया है। तब से वह **बुद्ध** कहलाया, जिसका अर्थ है “जागृत”। उसने अपना शेष जीवन दूसरों को वह मार्ग सिखाने में बिताया, जिसके बारे में उसका मानना था कि वह उन्हें दुःख से परे ले जा सकता है।



बुद्ध की शिक्षा: धम्म

बुद्ध की शिक्षा के केंद्र में **चार आर्य सत्य** हैं: दुःख जीवन का अनिवार्य हिस्सा है; दुःख की जड़ इच्छा (तृष्णा) और अज्ञान है; दुःख का अंत हो सकता है; और उस पर विजय पाने का उपाय **मध्यम मार्ग** है, जो **आर्य अष्टांगिक मार्ग** के रूप में प्रकट होता है।

इस शिक्षा में यह विश्वास शामिल है कि इच्छा स्वयं ही अंततः दुःख का स्रोत है, चाहे इच्छा की वस्तु अच्छी मानी जाए या बुरी। इसलिए बौद्ध साधना इच्छा को बुझाकर निर्वाण तक पहुँचना चाहती है, जिसे दुःख से और जन्म, मृत्यु और पुनर्जन्म के निरंतर चक्र से मुक्ति समझा जाता है।

इस ढाँचे में अंतिम लक्ष्य किसी व्यक्तिगत परमेश्वर के साथ संगति नहीं, बल्कि जागृति और इच्छा के बुझ जाने के द्वारा मुक्ति है।



आज व्यवहार में बौद्ध धर्म

अलग-अलग संस्कृतियों और समुदायों में बौद्ध धर्म अलग दिखाई देता है। संसार के कई भागों में यह केवल एक निश्चित विश्वास-प्रणाली नहीं, बल्कि दैनिक जीवन में बुना हुआ एक सांस्कृतिक ढाँचा है। स्थानीय रीति-रिवाज, त्योहार, सामाजिक मूल्य और आत्मिक परंपराएँ बौद्ध शिक्षाओं और प्रथाओं के साथ घुल-मिल सकती हैं।

कुछ समुदायों में बौद्ध साधना के साथ-साथ पूर्वजों की पूजा भी होती है, जिसमें ऐसे अनुष्ठान शामिल हैं जिनमें मृत परिजनों से सहायता या मार्गदर्शन माँगा जाता है, और अन्य आत्मिक प्रथाएँ भी। बहुत से अनुयायियों के लिए दैनिक धार्मिक जीवन **पुण्य कमाने** के इर्द-गिर्द घूमता है, अर्थात् ऐसे कामों के द्वारा जिनसे आत्मिक लाभ मिलने का विश्वास किया जाता है, जैसे दान देना, धार्मिक व्यक्तियों का आदर करना, भिक्षुओं की सहायता करना या धार्मिक समारोहों में भाग लेना।

बौद्ध धर्म की तीन धाराएँ

बौद्ध धर्म की तीन मुख्य धाराएँ हैं। यद्यपि उनकी बुनियादी शिक्षाएँ समान हैं, फिर भी अलग-अलग संस्कृतियों के प्रभाव से हर एक ने अपने अलग विश्वास और प्रथाएँ विकसित की हैं।

थेरवाद — “स्थविरों (बुजुगों) की शिक्षा”

ज़ोर: व्यक्तिगत अनुशासन, ध्यान, नैतिक जीवन और जागृति। थेरवाद पालि **त्रिपिटक** का निकटता से पालन करता है और म्यांमार, थाईलैंड, कंबोडिया और लाओस में प्रमुख है।

महायान — “महान यान”

ज़ोर: अपने और दूसरों के लिए दुःख से मुक्ति। महायान परंपराएँ बुद्ध और अन्य ज्ञान-प्राप्त प्राणियों का आदर करती हैं और चीन, जापान, वियतनाम और कोरिया में व्यापक रूप से फैली हैं।

वज्रयान — “हीरक (वज्र) यान”

ज़ोर: अनुष्ठान, प्रतीक, मंत्र-जाप, ध्यान और कल्पना-दर्शन। वज्रयान में तिब्बती और शिंगोन बौद्ध धर्म शामिल हैं, और यह तिब्बत, भूटान, नेपाल और मंगोलिया में प्रमुख है।

कार्य पूरा करना: सब बौद्धों के लिए राज्य के दृष्टान्तों के द्वारा प्रार्थना

बौद्ध जगत के लिए प्रार्थना करना कठिन लग सकता है। वहाँ के लोग, विश्वास और स्थान अत्यंत विविध हैं, और बौद्ध धर्म स्वयं भी कई परतों वाला और जटिल है, जिसे सदियों के इतिहास, भूगोल और राजनीति ने आकार दिया है। समझने के लिए इतना कुछ है कि ऐसा लग सकता है मानो बुद्धिमानी से प्रार्थना करने के लिए पूरा पुस्तकालय चाहिए।

परन्तु इस प्रार्थना मार्गदर्शिका का मूल संदेश सरल है: बौद्ध लोगों के लिए प्रार्थना करें। मत्ती 6:7 में यीशु हमें याद दिलाता है कि प्रार्थना को जटिल या बहुत शब्दों वाली होने की आवश्यकता नहीं है।

अधूरा कार्य:

आज 3.6 अरब से अधिक लोग ऐसे हैं जिन्होंने यीशु का सुसमाचार कभी नहीं सुना। जहाँ संसार भर में मसीह के अनुयायी लगभग 1.5% की दर से बढ़ रहे हैं, वहीं यीशु का अनुसरण न करनेवालों की संख्या 1.8% की दर से बढ़ रही है।



50 करोड़ अब भी अपहुँचे

संसार के 50 करोड़ बौद्ध अधिकतर अपहुँचे हैं और अधूरे कार्य के केंद्र में बने हुए हैं। उनमें से अधिकांश ने कभी सुसमाचार नहीं सुना, और उन्हें अपनी ही संस्कृति के किसी व्यक्ति से शुभ संदेश सुनने का बहुत कम या कोई अवसर नहीं मिलता। सदियों की बौद्ध शिक्षा से प्रभावित होकर वे गहरी आत्मिक लालसा के साथ जीते हैं, पर कोई ऐसा नहीं है जो उन्हें यीशु के आशा और उद्धार के संदेश को स्पष्ट रूप से बताए।

हम संसार भर में किसी “समूह” के लिए नहीं, बल्कि उन व्यक्तियों के लिए प्रार्थना करने इकट्ठा होते हैं जिनसे परमेश्वर गहरा प्रेम करता है। हम इस विश्वास के साथ प्रार्थना करते हैं कि बहुत से जो पहले बौद्ध थे, एक दिन हमारे साथ परमेश्वर के सिंहासन के सामने खड़े होंगे, उस “बड़ी भीड़” का भाग बनकर “जिसे कोई गिन नहीं सकता था”, जो “हर एक जाति, और कुल, और लोग और भाषा में से” होगी।

राज्य के दृष्टान्त

हर दिन हम एक अलग क्षेत्र, एक अलग शहर और अलग बौद्ध परंपराओं के लिए प्रार्थना करेंगे। साथ ही हर दिन हम राज्य के एक अलग दृष्टान्त के द्वारा प्रार्थना करेंगे।

यीशु ने रोज़मर्रा के चित्रों का उपयोग करके दिखाया कि राज्य किस प्रकार बढ़ोतरी की सामर्थ्य से आगे बढ़ता है, और यह भी कि राज्य स्वयं कितना अनमोल है। उसने बीज बिखेरने वाले किसान की, आटे में खमीर मिलाने वाली स्त्री की, ऐसे व्यापारी की जिसे अपनी सारी संपत्ति के बराबर मूल्य का खज़ाना मिला, और समुद्र से खींचे गए हर प्रकार की मछलियों से भरे जाल की बात की। कोई एक चित्र राज्य की पूर्णता को व्यक्त नहीं कर सकता था।

हबक्कूक ने इसे जल के रूप में देखा। यीशु ने इसे बीज, खमीर, खज़ाना, जाल और भोज के रूप में बताया। चित्र बढ़ते जाते हैं क्योंकि परमेश्वर के राज्य की सच्चाई इतनी विशाल है कि वह किसी एक चित्र में समा नहीं सकती।

हर दृष्टान्त राज्य का एक सिद्धांत प्रकट करता है जो उस विशेष स्थान के लिए हमारी प्रार्थनाओं का मार्गदर्शन करेगा: राज्य कैसे विरोध वाली भूमि में जड़ पकड़ता है, कैसे अदृश्य रूप से ऐसे राष्ट्र में फैलता है जो उसे रोक नहीं सकता, कैसे लोगों को ऐसे खज़ाने के लिए सब कुछ छोड़ देने को प्रेरित करता है जिसके मिलने की उन्होंने कभी आशा नहीं की थी, कैसे खोए हुए लोगों के मिलने तक खोजता रहता है, और कैसे अपना निमंत्रण उन सुनसान रास्तों और उपेक्षित स्थानों तक ले जाता है जहाँ कोई देखने की सोचता भी नहीं।

ये दृष्टान्त मिलकर ऐसे राज्य का चित्र बनाते हैं जो छिपा हुआ होकर भी अजेय है, कीमती होकर भी मुफ्त में दिया गया है, और देखने में छोटा होकर भी संसार को भर देने के लिए ठहराया गया है।

जब आप इन पन्नों के द्वारा प्रार्थना करें, तो उस सच्चाई का अनुभव करने की आशा के साथ आएँ। वही परमेश्वर जिसने गलील की एक पहाड़ी पर ये दृष्टान्त बिखेरे थे, आज बौद्ध जगत में अपना वचन बिखेर रहा है। ये सात दिन उस काम में उसके साथ जुड़ने का निमंत्रण हैं: उन आँखों से प्रार्थना करना जो देखती हैं कि वह पहले से क्या कर रहा है, और उस विश्वास से जो उसने पूरा करने की प्रतिज्ञा की है।



परमेश्वर कार्य कर रहा है: आंदोलन क्या है?

आत्मिक सफलता कैसी दिखती है? संसार भर में “प्रेरितों के काम” जैसे आंदोलन उभर रहे हैं, बौद्ध जगत के कुछ भागों में भी। हम प्रार्थना करते हैं कि ये आंदोलन पूरे बौद्ध जगत में बढ़ते जाएँ।

इन आंदोलनों में साधारण विश्वासी बाइबल-आधारित और दोहराए जा सकने वाले तरीकों से शुभ संदेश सुनाते हैं, और चेले चेले बनाते हैं, अगुवे अगुवे तैयार करते हैं, और कलीसियाएँ कलीसियाएँ स्थापित करती हैं।

आज संसार भर में 2,000 से अधिक प्रमाणित कलीसिया-स्थापना आंदोलन सक्रिय हैं, जिनमें 20 करोड़ से अधिक चेले और 1 करोड़ कलीसियाएँ हैं। आंदोलन कोई आधुनिक रणनीति नहीं है; यह आरंभिक कलीसिया का नमूना है, जब चेलों और कलीसियाओं के बढ़ने के द्वारा सुसमाचार तेज़ी से फैला।

इस प्रकार के राज्य आंदोलन के लिए बौद्ध जगत आज भी सबसे बड़ी सीमाओं में से एक है। प्रार्थना कोई सहायक प्रयास नहीं है; यह वह इंजन है जो राज्य की बढ़ोतरी को आगे बढ़ाता है। हम विश्वास से प्रार्थना करते हैं कि परमेश्वर उन बौद्धों के बीच, जिनसे वह प्रेम करता है, भरपूर और बढ़ती हुई कटनी लाएगा।



110 शहर ही क्यों?

इस पूरी मार्गदर्शिका में आपको दक्षिण, दक्षिण-पूर्व और पूर्वी एशिया के ऐसे शहर मिलेंगे जिनमें बड़ी बौद्ध आबादी है। हम इन शहरों पर ज़ोर देते हैं क्योंकि परमेश्वर शहरों से प्रेम करता है और क्योंकि ये सुसमाचार के लिए उछाल-पटल बन सकते हैं।

आज संसार की आधी से अधिक आबादी शहरों में रहती है, और 2050 तक यह संख्या दो-तिहाई तक पहुँचने की संभावना है। ये 110 शहर संसार के सबसे अपहुँचे महानगरों में से हैं, और इनमें वे भाषाएँ बोली जाती हैं जो संसार के शेष अपहुँचे जनसमूहों में से 97% की भाषाएँ हैं।

हमारी प्रार्थना है कि हर शहर में राज्य का आंदोलन हो: पवित्र आत्मा का एक स्वाभाविक कार्य, जिसमें चेले बढ़ते जाएँ, कलीसियाएँ बढ़ें, और शहरी जीवन का हर हिस्सा मसीह से छुआ जाए।

भजन संहिता 110:1-3 परमेश्वर के लोगों को बुलाता है कि वे जाति-जाति के लोगों को माँगने में उसके साथ जुड़ें। हम इसलिए प्रार्थना नहीं करते कि कार्य छोटा है, बल्कि इसलिए कि यीशु हर शहर और हर जाति के योग्य है।

संसार भर के करोड़ों लोगों के साथ उन लोगों के लिए प्रार्थना में जुड़ने के लिए धन्यवाद, जिनका घर ये शहर हैं।

दिन 1: 25 जनवरी

1/2

दक्षिण-पूर्व एशिया:

थाईलैंड, कंबोडिया, म्यांमार

केंद्र शहर: नोम पेन्ह, कंबोडिया

“जो अच्छी भूमि में बोया गया, यह वह है, जो वचन को सुनकर समझता है, और फल लाता है कोई सौ गुना, कोई साठ गुना, कोई तीस गुना।”

मती 13:23 (IRV)

गवाही: राज्य की चौथी भूमि बढ़ोतरी लाती है

छह लाओ और 12 ईसाण चेलों का एक प्रचार दल अपने विश्वास को बाँटने के लिए ऐसे गाँवों में गया जहाँ कोई कलीसिया नहीं थी। जब वे आत्मिक बातों पर चर्चा करते, तो उन्हें बार-बार एक जानी-मानी ओझा के बारे में एक ही बात सुनने को मिलती: “नंगता? उसे सब जानते हैं, पर वह तो पिछले साल मर गई।”

परन्तु नंगता मरी नहीं थी।

वह कभी एक प्रसिद्ध ओझा थी, जिसके पास गाँव वाले चंगाई, छुटकारे और आशीष के लिए आते थे। परन्तु जिन आत्माओं की वह सेवा करती थी, उन्होंने उसके स्वास्थ्य को भारी हानि पहुँचाई, यहाँ तक कि वह गंभीर रूप से बीमार हो गई और उसे यकीन हो गया कि वह मरने वाली है।

तब पास की एक घरेलू कलीसिया के विश्वासी उसके गाँव आए। उन्होंने उसके घर में उसे सुसमाचार सुनाया। उसने यीशु को ग्रहण किया, आत्माओं की दुनिया को त्याग दिया और चमत्कारी रूप से चंगी हो गई। यीशु की चेली बनने के बाद नंगता ने आत्माओं से जुड़े अनुष्ठान करना बंद कर

दिया। इसी कारण दूसरे गाँवों के लोगों ने मान लिया कि वह मर गई है। जब महीनों बाद प्रचार दल पहुँचा, तो नंगता ने उन्हें ठहराने के लिए अपना घर खोल दिया।

जब दल ने उसे बताया कि दूसरे गाँवों में लोग कह रहे हैं कि वह मर गई है, तो नंगता हँस पड़ी।

“वे सही कहते हैं, मैं सचमुच मर गई! मैं अपने आप के लिए मर गई, और अब मैं यीशु के लिए जीती हूँ।”

नंगता की गवाही बहुत से गाँवों तक फैल गई, और इस प्रचार के द्वारा 172 लोगों ने यीशु के बारे में सुना और 33 लोगों ने उसके पीछे चलने की इच्छा प्रकट की।

एक व्यक्ति, श्री तोंगदी, इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने विश्वासियों से अपने बौद्ध और तंत्र-मंत्र वाले ताबीज़ नष्ट करने में सहायता माँगी। बहुत से लोग सोचते थे कि नंगता मर चुकी है। परन्तु वह मसीह में पहले से कहीं अधिक जीवित है।

प्रार्थना का केंद्र

हे प्रभु, नंगता की कहानी पूरे थाईलैंड में दोहराई जाए: केवल एक स्त्री का जीवन नहीं, बल्कि पूरे परिवार, गाँव और समुदाय मसीह में जीवित हो उठें।

श्रीलंका के लिए प्रार्थना करें

श्रीलंका: 68% बौद्ध, 1.5 करोड़ लोग। यहाँ मसीहियों पर काफ़ी सताव होता है। सिंहली बौद्धों तक पहुँचने वाले छोटे परन्तु बढ़ते घरेलू कलीसिया नेटवर्कों के लिए प्रार्थना करें।

थाईलैंड के बारे में और

थाई लोग, जो थाईलैंड का सबसे बड़ा जातीय समूह हैं, ऐतिहासिक रूप से स्यामी कहलाते थे। आज उन्हें सामान्यतः चार क्षेत्रीय समूहों में पहचाना जाता है: मध्य थाई, उत्तर-पूर्वी थाई (ईसाण), उत्तरी थाई और दक्षिणी थाई। हर क्षेत्र की अपनी बोलियाँ और सांस्कृतिक विशेषताएँ हैं, जबकि बौद्ध धर्म एक साझा धागा है जो एक साझा थाई पहचान बनाने में योगदान देता है।

आइए प्रार्थना करें

आत्मिक बंधन से छुटकारा:

प्रार्थना करें कि जो लोग प्रेतात्मवाद, बौद्ध धर्म और आत्माओं के भय में फँसे हैं, वे यीशु की स्वतंत्रता और अधिकार का अनुभव करें। प्रार्थना करें कि उन्हें उन प्रथाओं को त्यागने का साहस मिले जिन्होंने उन्हें बंधन में रखा है।

(यूहन्ना 8:36)

नंगता के समान बदले हुए जीवन:

प्रार्थना करें कि परमेश्वर स्वयं को उन लोगों पर प्रकट करे जो आत्माओं की दुनिया के द्वारा चंगाई, सुरक्षा या उत्तर खोज रहे हैं। उससे माँगें कि वह विश्वासियों का उपयोग घरों और समुदायों में सुसमाचार सुनाने के लिए करे, ताकि लोग अंधकार से निकलकर मसीह में जीवन पाएँ। **(कुलुस्सियों 1:13)**

साहसी, आत्मा की अगुवाई में चलने वाले विश्वासी:

लाओ, ईसान, थाई और अन्य स्थानीय विश्वासियों के लिए प्रार्थना करें कि वे साहस के साथ कलीसिया-रहित गाँवों में जाएँ, संबंध बनाएँ और उन लोगों को यीशु के बारे में बताएँ जिन्होंने कभी नहीं सुना। प्रार्थना करें कि परमेश्वर उन्हें ऐसे शांति के व्यक्तियों तक ले जाए जो सुसमाचार के लिए खुले हैं।

(मत्ती 9:37-38)

नई घरेलू कलीसियाएँ बढ़ती जाएँ:

प्रार्थना करें कि नए विश्वासी घरों में इकट्ठा हों, जैसे नंगता का घर आराधना और चेला बनाने का स्थान बन गया। परमेश्वर से माँगें कि वह परिपक्व स्थानीय अगुवे खड़े करे और पूरे थाईलैंड में स्वस्थ, बढ़ने वाली कलीसियाओं की संख्या बढ़ाए। **(2 तीमथियुस 2:2)**

सुसमाचार की प्रगति:

प्रार्थना करें कि यीशु की बचाने, चंगा करने और बदलने वाली सामर्थ की गवाहियाँ पूरे थाईलैंड में गाँव-गाँव फैलें। विशेष रूप से उनके लिए प्रार्थना करें जो श्री तोंगदी के समान सुसमाचार सुनते ही प्रतिक्रिया देने को तैयार हैं।

(प्रेरितों के काम 13:49)

जीवन में लागू करें

परमेश्वर का राज्य विरोध वाले स्थानों में विरोध से बचकर नहीं, बल्कि उसके बीच से आगे बढ़कर बढ़ता है। परमेश्वर आपको कहाँ पीछे हटने के बजाय आगे बढ़ने के लिए बुला रहा है?

थाईलैंड, कंबोडिया,
म्यांमार

2/2





दिन 2: 26 जनवरी

वियतनाम, लाओस:

केंद्र शहर: हनोई, वियतनाम

1/2

“उसने उन्हें एक और दृष्टान्त दिया, ‘स्वर्ग का राज्य राई के एक दाने के समान है, जिसे किसी मनुष्य ने लेकर अपने खेत में बो दिया। वह सब बीजों से छोटा तो है पर जब बढ़ जाता है तब सब साग-पात से बड़ा होता है...”

मत्ती 13:31-32 (IRV)

गवाही: राज्य की बढ़ोतरी — छोटे बीज से पेड़ तक

2017 में लाओस की राष्ट्रीय कलीसिया ने चेले बनाने और कलीसियाएँ स्थापित करने के लिए बढ़ोतरी वाला तरीका अपनाया। 75 लाख लोगों के बीच 200 से अधिक जातीय-भाषाई समूह होने के कारण हर समुदाय तक पहुँचना असंभव कार्य लगता था।

परन्तु राई के दाने के समान, जो छोटे से शुरू हुआ था, वह बढ़ गया है।

पिछले कुछ वर्षों में हर जनसमूह में योजनाबद्ध तरीके से चेले बनाने वालों को भेजा गया है। कुछ को निकाल दिया गया या पुलिस ने हिरासत में ले लिया। फिर भी बहुत से स्थानों में सुसमाचार ने जड़ पकड़ी, नए चेले उभरे और

कलीसियाएँ स्थापित हुईं। जैसे-जैसे लाओ अगुवों ने हर जाति के लिए परमेश्वर के हृदय को पहचाना, वे बड़े जोखिम उठाने लगे और मसीह का संदेश लेकर दूर-दराज़ के गाँवों तक जाने लगे।

अब राज्य नई पीढ़ियों में बढ़ रहा है। कई प्रांतों में कलीसियाएँ चौथी पीढ़ी से आगे बढ़ चुकी हैं। और यह आंदोलन सीमाएँ पार कर रहा है, क्योंकि लाओ अगुवे एक पड़ोसी देश के चेलों के साथ मिलकर ऐसे समुदायों तक सुसमाचार पहुँचा रहे हैं जहाँ शुभ संदेश पहले कभी नहीं सुना गया था।

प्रार्थना का केंद्र

हे प्रभु, लाओस के लोगों को खुले हृदय दे, मार्ग तैयार कर, और ऐसे चेलों को बढ़ा जो तेरे राज्य को उन स्थानों तक ले जाएँ जहाँ अब तक कोई नहीं पहुँचा। हम ऐसे चेले माँगते हैं जो चेले बनाएँ।

ताइवान के लिए प्रार्थना करें

प्यू रिसर्च सेंटर के अनुसार ताइवान की 28% आबादी विशेष रूप से बौद्ध धर्म से अपनी पहचान रखती है। बहुत से लोग बौद्ध धर्म, ताओ धर्म और पारंपरिक चीनी लोक धर्म का मिला-जुला रूप मानते हैं। प्रार्थना करें कि ताइवानी विश्वासी अपने बौद्ध परिजनों और पड़ोसियों तक पहुँचें।

हनोई, वियतनाम के बारे में और

वियतनाम की राजधानी हनोई साम्यवादी सरकार का केंद्र है, जो पूरे देश में धार्मिक गतिविधियों पर प्रतिबंध लगाती है। प्यू रिसर्च सेंटर के अनुसार 2024 में वियतनाम के 38% वयस्कों (लगभग 3.7-3.8 करोड़ लोग) ने स्वयं को बौद्ध बताया। फिर भी इन प्रतिबंधों के नीचे भूमिगत घरेलू कलीसिया नेटवर्क बढ़ रहे हैं, और पिछले दशकों में पहाड़ी क्षेत्रों के जातीय अल्पसंख्यकों के बीच आंदोलनों में उल्लेखनीय बढ़ोतरी हुई है। हनोई के बारे में और जानकारी यहाँ पाएँ।

आइए प्रार्थना करें

राज्य खमीर के समान पूरे लाओस में फैले:

परमेश्वर से माँगें कि वह उभरती कलीसियाओं को मज़बूत करे, बढ़ोतरी करने वाले अंगुवे खड़े करे, और उन लोगों को साहस दे जो दूर-दराज़ और अपहुँचे समुदायों तक सुसमाचार ले जा रहे हैं। **(मत्ती 13:33)**

राई के दाने जैसी शुरुआत आंदोलन बन जाए:

पवित्र आत्मा से माँगें कि वह हर शेष जनसमूह के बीच द्वार खोले, और विरोध, हिरासत या निष्कासन का सामना करने वाले सेवकों की रक्षा करे।

(मत्ती 13:31-32)

बढ़ोतरी पीढ़ियों और सीमाओं को पार करे:

प्रार्थना करें कि चेले चेले बनाएँ, कलीसियाएँ कलीसियाएँ स्थापित करें, और सुसमाचार तब तक आगे बढ़ता रहे जब तक लाओस और पड़ोसी देशों के हर जनसमूह को यीशु से मिलने का अवसर न मिल जाए।

(2 थिस्सलुनीकियों 3:1-2)

राज्य की कटनी:

वियतनाम के मध्य पहाड़ी क्षेत्रों के जातीय अल्पसंख्यक विश्वासियों के द्वारा बड़ी कटनी के लिए प्रार्थना करें, जो अपने ही समुदायों में चेलों को बढ़ा रहे हैं

(2 तीमुथियुस 2:2)।

जीवन में लागू करें

राज्य ऐसे तरीकों से बढ़ता है जिन्हें हम हमेशा देख या माप नहीं सकते। क्या आप बीज बोने के लिए प्रतिबद्ध होंगे, चाहे आप कभी कटनी न भी देखें?



दिन 3: 27 जनवरी

चीन:
केंद्र शहर: चेंगदू

1/2

उसने एक और दृष्टान्त उन्हें सुनाया, “स्वर्ग का राज्य खमीर के समान है जिसको किसी स्त्री ने लेकर तीन पसेरी आटे में मिला दिया और होते-होते वह सब खमीर हो गया।”

मत्ती 13:33 (IRV)

गवाही: राज्य का खमीर पूरे समूहों में फैलता है

हिमालय की ऊँचाइयों में, चीन और नेपाल की सीमा के पास, कलीसिया-स्थापक सोनम ऐसे गाँवों में पैदल जाता है जहाँ यीशु का नाम कभी नहीं सुना गया।

और राज्य जड़ पकड़ रहा है।

केवल एक वर्ष में उन लोगों के बीच सैकड़ों नई कलीसियाओं का जन्म हुआ है, जिन्हें लंबे समय से सुसमाचार के लिए बंद माना जाता था।

कभी-कभी इसकी शुरुआत एक ही व्यक्ति से होती है।

पहाड़ों के एक दूर-दराज़ गाँव में एक युवती वर्षों से बीमार थी। सोनम ने उसके लिए प्रार्थना की, और वह चमत्कारी रूप से पूरी तरह चंगी हो गई।

इसके कुछ ही समय बाद उसने यीशु के उदाहरण का पालन किया और बपतिस्मे की जल-समाधि में उतरी।

तब कुछ बिल्कुल अप्रत्याशित हुआ। उसके पिता ने सब कुछ देखा था। उसने अपनी बेटी को चंगा होते देखा था। उसने उसके विश्वास को जड़ पकड़ते देखा था। और जो कुछ उसने देखा, उसने उसके अपने हृदय में भी कुछ जगा दिया।

वह अपनी बेटी के पीछे-पीछे नदी तक गया और उसने भी बपतिस्मा लिया।

परमेश्वर ने इस परिवार का उद्धार करना आरंभ कर दिया है।

परन्तु कहानी अभी पूरी नहीं हुई है। घर के दूसरे सदस्यों ने अभी यह कदम नहीं उठाया है।

इस परिवार के बाकी लोगों के लिए प्रार्थना करें कि वे भी यीशु से मिलें और उसके राज्य में प्रवेश करें। और इन दूर-दराज़ सीमावर्ती क्षेत्रों के उन हजारों लोगों के लिए प्रार्थना करें जो अब भी यह सुनने की प्रतीक्षा में हैं कि राज्य निकट आ गया है।

प्रार्थना का केंद्र

राज्य का विस्तार: प्रार्थना करें कि राज्य संसार की सबसे बड़ी बौद्ध आबादी के बीच भी फैले, और चीन में परमेश्वर के राज्य की बढ़ती का अन्त न हो
(यशायाह 9:7)।

हांगकांग के लिए प्रार्थना करें

हांगकांग की लगभग 75.1 लाख की कुल आबादी में 10 लाख से अधिक बौद्ध हैं। राजनीतिक बदलाव से गुज़र रहे इस शहर में कलीसियाओं की संख्या काफी है। प्रार्थना करें कि लगातार सामाजिक उथल-पुथल के बीच हांगकांग के विश्वासी साहस और प्रेम के साथ अपने बौद्ध पड़ोसियों तक पहुँचें।

चेंगदू, चीन के बारे में और

सिचुआन प्रांत की राजधानी चेंगदू हान चीनी संस्कृति और आंदोलनों की गतिविधि, दोनों का एक प्रमुख केंद्र है, और तिब्बती बौद्ध क्षेत्रों के प्रवेश द्वार पर स्थित है। चीन के 23 करोड़ बौद्ध संसार की सबसे बड़ी बौद्ध आबादी हैं, फिर भी उनमें से अधिकांश बढ़ती हुई चीनी कलीसिया की पहुँच से बाहर हैं। और जानकारी यहाँ पाएँ।

आइए प्रार्थना करें

घरेलु कलीसिया नेटवर्क: प्रार्थना करें कि चीन के घरेलु कलीसिया नेटवर्क साहस के साथ अपने बौद्ध मित्रों और परिजनों को यीशु के बारे में बताएँ, और बहुत से नए चेले बनाएँ जो आगे दूसरों को भी चेला बनाएँ **(प्रेरितों के काम 1:8)**।

आंदोलन के अगुवे:

सिचुआन और युन्नान प्रांतों में हान चीनियों और जातीय अल्पसंख्यक बौद्ध लोगों के बीच काम करने वाले आंदोलन के अगुवों के लिए प्रार्थना करें कि उन्हें बड़ी कटनी मिले **(भजन संहिता 96:3)**।

चीन की कलीसिया:

प्रार्थना करें कि परमेश्वर चीन की कलीसियाओं में प्रार्थना और खोए हुआँ के लिए जोश फिर से जगाए, और वह चीन में फिर से हर सुबह प्रार्थनाओं की आवाज़ सुने **(मरकुस 1:35)**। प्रार्थना करें कि चीन का हर मसीही और हर कलीसिया पूरी भक्ति और गरिमा के साथ चैन और शांति से जीवन बिता सके, ताकि परमेश्वर का काम बिना रुकावट चलता रहे **(1 तीमुथियुस 2:2)**। प्रार्थना करें कि चीन के सब चेलों और कलीसियाओं पर परमेश्वर की बुद्धि हो, ताकि वे अपने लिए परमेश्वर की इच्छा जान सकें और यह भी कि परमेश्वर उनसे कैसा आचरण चाहता है **(याकूब 1:5)**।

सीमांत अपहुँचे जनसमूह:

प्रार्थना करें कि कटनी के मज़दूरों को साहस, हिम्मत और बुद्धि मिले, और वे चीन की सीमाओं के भीतर 76 सीमांत अपहुँचे जनसमूहों (ऐसे लोग जिनके बीच सुसमाचार की लगभग कोई गवाही नहीं है) में भेजे जाएँ, और वहाँ कटनी शुरू हो **(रोमियों 15:20-21)**।

जीवन में लागू करें

यशायाह 9:7 घोषणा करता है कि परमेश्वर की प्रभुता की बढ़ती का अन्त न होगा। क्या आप यह प्रार्थना करने में जुड़ेंगे कि इन देशों में उसका राज्य शीघ्र ही उन सब शक्तियों पर जय पाए जो उसके विरोध में खड़ी हैं?



दिन 4: 28 जनवरी

1/2

**जापान, दक्षिण कोरिया
और उत्तर कोरिया:**
केंद्र शहर: टोक्यो, जापान

“स्वर्ग का राज्य खेत में छिपे हुए धन के समान है, जिसे किसी मनुष्य ने पाकर छिपा दिया, और आनन्द के मारे जाकर अपना सब कुछ बेचकर उस खेत को मोल लिया। फिर स्वर्ग का राज्य एक व्यापारी के समान है जो अच्छे मोतियों की खोज में था। जब उसे एक बहुमूल्य मोती मिला तो उसने जाकर अपना सब कुछ बेच डाला और उसे मोल ले लिया।”

मत्ती 13:44-46 (IRV)

गवाही: राज्य की कटनी सब कुछ से बढ़कर मूल्यवान है

मार्च 2011 के भूकंप और सुनामी ने जापान को तबाह कर दिया था। उसके दस महीने बाद मिशन सेवक थाईलैंड में इकट्ठा हुए और उन्होंने उत्तर-पूर्वी तट से एक अद्भुत समाचार सुना।

इस क्षेत्र ने सबसे भयानक विनाश झेला था, और यह लंबे समय से जापान के उन स्थानों में से था जहाँ सबसे कम कलीसियाएँ थीं। फिर भी वहाँ कुछ अप्रत्याशित हो रहा था।

लोग इतनी तेज़ी से यीशु के पास आ रहे थे कि परिपक्व विश्वासी उन्हें चेला बनाने में पीछे रह जाते थे।

एक मछुआरा, जिसने अपना सब कुछ खो दिया था, उसने अनुभव किया कि यीशु का एक चेला उसके साथ खड़ा हुआ और अपना जीवन फिर से बसाने में उसकी सहायता की। इस दया से प्रभावित होकर आखिरकार उसने पूछा, “आप यह सब क्यों कर रहे हैं?”

“क्योंकि मेरी उस परमेश्वर से मित्रता है जिसने आपको बनाया है,” उस व्यक्ति ने उत्तर दिया। अस्थायी आवास में रहने वाली एक स्त्री ने बताया कि यीशु उसके पास ऐसे आया जैसे कोई पड़ोसी मिलने आता है। उसने उससे कहा कि जो चीज़ें उसने खो दी थीं, वे अब कोई मायने नहीं रखतीं।

बार-बार ऐसे लोगों की कहानियाँ सामने आईं जिनके जीवन इस आपदा ने बिखेर दिए थे, और जिन्होंने फिर मसीह में आशा पाई।

जापानी मिशन-विशेषज्ञ डॉ. मित्सुओ फुकुदा ने जो हो रहा था उसे संक्षेप में यूँ कहा: “उन्हें प्रचार करने की ज़रूरत नहीं पड़ी। उन्हें बस वह फल इकट्ठा करना था जो परमेश्वर लाया था।”

जहाँ लहरें विनाश लाई थीं, वहाँ परमेश्वर नया जीवन ला रहा था। जहाँ कलीसिया को जड़ पकड़ने में कठिनाई हुई थी, वहाँ राज्य फलने-फूलने लगा था।

प्रार्थना का केंद्र: दक्षिण कोरिया

एशिया के सबसे बड़े मसीही समुदायों में से एक: दक्षिण कोरियाई विश्वासियों के लिए प्रार्थना करें, जो एशिया के सबसे बड़े मसीही समुदायों में से एक हैं, कि वे अपनी मिशनरी ऊर्जा को अपने ही देश की बौद्ध बहुसंख्या के बीच नए चेलों की बड़ी कटनी की ओर लगाएँ।
(रोमियों 10:1)

उत्तर कोरिया के लिए प्रार्थना करें

उत्तर कोरिया में कभी महत्वपूर्ण रही बौद्ध विरासत को दबा दिया गया है, और धार्मिक स्वतंत्रता लगभग है ही नहीं। बंद सीमाओं के पीछे और भारी सताव के बीच एक छिपी हुई कलीसिया यीशु के पीछे चल रही है, अक्सर बड़ी व्यक्तिगत कीमत चुकाकर। गुप्त में आराधना करने वाले विश्वासियों के साहस और सुरक्षा के लिए प्रार्थना करें, और प्रार्थना करें कि सुसमाचार उन स्थानों तक पहुँचे जहाँ वह कभी नहीं सुना गया।

टोक्यो, जापान के बारे में और

टोक्यो संसार के बड़े महानगरों में से एक है, फिर भी यह सबसे कम पहुँचे गए शहरों में से एक बना हुआ है। जापान की 1% से भी कम आबादी स्वयं को इवेंजेलिकल मसीही बताती है और पूरे देश में 6.95 करोड़ बौद्ध हैं, इसलिए जापान सुसमाचार के लिए एक विशाल सीमांत क्षेत्र है। फिर भी परमेश्वर कार्य कर रहा है। इस आत्मिक रूप से भूखे देश में साधारण विश्वासी दया के कामों और विश्वासयोग्य गवाही के द्वारा यीशु की उपस्थिति को घरों, संबंधों और समुदायों तक ले जा रहे हैं। जैसे-जैसे राज्य के ये बीज जड़ पकड़ते हैं, हम चेलों के ऐसे आंदोलन के लिए प्रार्थना करते हैं जो बढ़ता जाए और पूरे जापान में मसीह की ज्योति फैलते देखे। टोक्यो के बारे में और जानकारी यहाँ पाएँ।

आइए प्रार्थना करें

जापानी अनुयायी: प्रार्थना करें कि यीशु के जापानी अनुयायी पूरे जापान में अपने बौद्ध पृष्ठभूमि वाले पड़ोसियों के बीच ऐसे चेले बनाना सीखें जो चेले बनाएँ। **(1 थिस्सलुनीकियों 2:8)**

कटनी के मज़दूर: प्रार्थना करें कि जापान में कटनी के मज़दूर एक साथ मिलने वाले चेलों के नए समूह शुरू करें, उसी नमूने के अनुसार जिससे यीशु ने अन्य बहत्तर चेलों को भेजा था **(लूका 10:1-23)**।

बदलने वाली सामर्थ: प्रार्थना करें कि राज्य की बदलने वाली सामर्थ और संदेश उस आत्मिक विरोध को तोड़ दे जिसने पीढ़ियों से जापान में मसीहियों को 1% से नीचे रखा है। **(2 कुरिन्थियों 4:4-6)**

बढ़ते हुए चेले: प्रार्थना करें कि दोनों देशों में बौद्ध पृष्ठभूमि वाले लोगों के बीच बढ़ते हुए चेलों के आंदोलन उभरें। **(यशायाह 43:19)**

जीवन में लागू करें

लूका 4:18 कहता है: “प्रभु का आत्मा मुझ पर है, इसलिए कि उसने केगालों को सुसमाचार सुनाने के लिये मेरा अभिषेक किया है, और मुझे इसलिए भेजा है, कि बन्धियों को छुटकारे का और अंधों को दृष्टि पाने का सुसमाचार प्रचार करूँ और कुचले हुआँ को छुड़ाऊँ।” यीशु ने बताया कि जब राज्य आएगा तो वह कैसा दिखेगा। आपके जीवन में ऐसा कौन है जो बंधन में या अंधा है, और जिसके साथ परमेश्वर आपसे इस सप्ताह यह संदेश बाँटने को कह रहा है?



दिन 5: 29 जनवरी

1/2

तिब्बती

बौद्ध जगत:

भारत, नेपाल, भूटान, तिब्बत

केंद्र शहर: ल्हासा, तिब्बत

“या कौन ऐसी स्त्री होगी, जिसके पास दस चाँदी के सिक्के हों, और उनमें से एक खो जाए; तो वह दीया जलाकर और घर झाड़-बुहारकर जब तक मिल न जाए, जी लगाकर खोजती न रहे? और जब मिल जाता है, तो वह अपने सखियों और पड़ोसियों को इकट्ठा करके कहती है, कि ‘मेरे साथ आनन्द करो, क्योंकि मेरा खोया हुआ सिक्का मिल गया है।’ मैं तुम से कहता हूँ, कि इसी रीति से...”

लूका 15:8-10 (IRV)

गवाही: राज्य खोए हुआ को जी लगाकर खोजता है

वर्षों तक नेपाल के अम्बी त्सुम्बा ने अपने परिवार और समुदाय के बौद्ध विश्वास का पालन किया। दो बेटों और चार बेटियों के पिता होने के नाते वह मानता था कि भले काम करना और बुद्ध की पूजा करना ही जीने का सही तरीका है।

फिर अम्बी ने सोम नाम के एक चेले की गवाही सुनी और यीशु मसीह के सुसमाचार से उसका परिचय हुआ।

सुसमाचार के शुभ संदेश ने अम्बी के लिए सब कुछ बदल दिया।

“सुसमाचार के द्वारा मैंने सीखा कि यीशु मसीह ही उद्धार का एकमात्र मार्ग है,” अम्बी ने बताया। “इस संदेश ने मेरे हृदय को गहराई से छू लिया। मैंने यीशु मसीह पर विश्वास किया और उसके पीछे चलने का निर्णय लिया।”

अम्बी और उसका परिवार त्सुम लोगों के बीच, जो एक तिब्बती बौद्ध जाति है, यीशु के पहले ज्ञात अनुयायी बने। इस निर्णय की उन्हें बड़ी कीमत चुकानी पड़ी। यीशु पर विश्वास के कारण उन्हें अपने गाँव से निकाल दिया गया और नेपाल की दूर-दराज़ नुब्री घाटी में, तिब्बत (चीन) की सीमा के पास, जाकर बसने के लिए मजबूर किया गया।

फिर भी अम्बी पीछे नहीं हट रहा। वह आभारी है कि किसी ने उसे सुसमाचार सुनाया और यीशु के द्वारा उसे ऐसी आशा मिली है जिसे कोई छीन नहीं सकता।

अब वह और उसका परिवार प्रार्थना कर रहे हैं कि त्सुम लोगों में से दूसरे भी एक दिन यही आशा पाएँ।

प्रार्थना का केंद्र: ल्हासा

खुले हृदयों और प्रभावशाली संदेशवाहकों के लिए प्रार्थना करें, जब अच्छा चरवाहा ल्हासा में, पूरे पठार पर और पूरे तिब्बती प्रवासी समुदाय में खोई हुई भेड़ों को ढूँढ़ता है। प्रार्थना करें कि वह सुसमाचार के लिए द्वार खोले और उन स्थानों में अपना राज्य स्थापित करे जहाँ उसका नाम अब भी अनजाना है।

बांग्लादेश के लिए प्रार्थना करें

बांग्लादेश में लगभग 13 लाख बौद्ध रहते हैं, जिनमें से बहुत से चकमा हैं। चकमा एक विशिष्ट आदिवासी जातीय समूह है, जो बांग्लादेश के चटगाँव पहाड़ी क्षेत्र, पूर्वोत्तर भारत के कुछ भागों और पश्चिमी म्यांमार के मूल निवासी हैं। प्रार्थना करें कि ये समुदाय स्थानीय विश्वासियों के द्वारा सुसमाचार से परिचित हों, और उनके बीच नए चेले और कलीसियाएँ उभरें।

ल्हासा, तिब्बत के बारे में और

ल्हासा तिब्बती बौद्ध धर्म का ऐतिहासिक हृदय और तिब्बती जगत का आत्मिक केंद्र है। प्रसिद्ध पोताला महल यहीं है, जो पूरे तिब्बती पठार से तीर्थयात्रियों को आकर्षित करता है। यहाँ पहुँच पर अब भी कड़े प्रतिबंध हैं, और तिब्बती बौद्ध धर्म यहाँ के लोगों की पहचान और दैनिक जीवन में गहराई से बुना हुआ है, जिससे ल्हासा संसार में सुसमाचार के सबसे कड़े विरोधी गढ़ों में से एक बन गया है। फिर भी कोई स्थान परमेश्वर की पहुँच से बाहर नहीं है। और जानकारी यहाँ पाएँ।

आइए प्रार्थना करें

नेपाली आंदोलन के अगुवे: प्रार्थना करें कि परमेश्वर उन नेपाली आंदोलन-अगुवों के फल को बढ़ाए जो हिमालय के पार तिब्बती बौद्ध समुदायों में काम कर रहे हैं। **(यशायाह 52:7)**

बाढ़ की आपदा: काठमांडू के उत्तर में बाढ़ से तबाह हुए समुदायों के लिए प्रार्थना करें: मसीहियों के लिए शांति, सांत्वना, बल और आशा की, जब वे अपने पीड़ित पड़ोसियों की भी सहायता करते हैं। प्रार्थना करें कि बहुत से लोग यह जानकर चेले बनें कि यीशु ही उनकी एकमात्र आशा है। **(भजन संहिता 34:18; यशायाह 61:1-3)**

भूटानी विश्वासी: प्रार्थना करें कि भूटानी चेले यीशु के पीछे चलने के कारण होने वाले सताव पर जय पाने के लिए मजबूत किए जाएं, और इस प्रकार स्पष्ट और सामर्थी गवाही दे सकें कि वे यीशु से क्यों प्रेम करते हैं और वह उन सब के लिए क्या कर सकता है जो उस पर विश्वास करते हैं। **(1 पतरस 4:14)**

भूटान और पूर्वोत्तर भारत: पूर्वोत्तर भारत और भूटान के दूर-दराज़ लोगों तक जाने वाले कटनी के मजदूरों के लिए पहुँच और भरपूर फल की प्रार्थना करें, जहाँ भौगोलिक अलगाव और सरकारी प्रतिबंध सुसमाचार की गवाही को सीमित करते हैं। **(यशायाह 45:2-3)**

दलित बौद्ध: भारत के दलित बौद्ध समुदायों के बीच, जो आत्मिक परिवर्तन के दौर से गुज़र रहे हैं, उन चेले बनाने वालों के द्वारा बड़ी कटनी के लिए प्रार्थना करें जिन्होंने हाल ही में उनके बीच काम शुरू किया है। **(यूहन्ना 4:35)**

जीवन में लागू करें

प्रेरितों के काम 3:21 कहता है: “अवश्य है कि वह स्वर्ग में उस समय तक रहे जब तक कि वह सब बातों का सुधार न कर ले जिसकी चर्चा प्राचीनकाल से परमेश्वर ने अपने पवित्र भविष्यद्वक्ताओं के मुख से की है।” क्या कोई विशेष तरीका है जिससे परमेश्वर चाहता है कि आप और आपकी कलीसिया इस सुधार में सहायता करें? क्या आप उस दिशा में प्रार्थना करने को तैयार हैं?

भारत, नेपाल, भूटान,
तिब्बत

2/2



दिन 6: 30 जनवरी

1/2

बौद्ध प्रवासी समुदाय: केंद्र शहर: डैलस, अमेरिका

“स्वामी ने दास से कहा, ‘सड़कों पर और बाड़ों की ओर जाकर लोगों को बरबस ले ही आ ताकि मेरा घर भर जाए। क्योंकि मैं तुम से कहता हूँ, कि उन आमन्त्रित लोगों में से कोई मेरे भोज को न चखेगा।’”

लूका 14:23-24 (IRV)

गवाही: राज्य द्वार पर

उत्तरी टेक्सास के एक बौद्ध मंदिर में, एक अप्रत्याशित स्थान पर, सुसमाचार के बीज बोए गए।

घर-घर जाकर किए गए प्रचार का बहुत कम प्रतिसाद मिला था। परन्तु जब सेवकों ने अंग्रेज़ी सीखना चाहने वाले बौद्ध भिक्षुओं से मित्रता करना शुरू किया, तो एक द्वार खुल गया। अब तक के सबसे महान व्यक्ति की 10 कहानियाँ नामक कहानी-श्रृंखला का उपयोग करते हुए, जो लाओस में सफलता से उपयोग की जा चुकी थी, दल ने यीशु के बारे में कहानियों के द्वारा अंग्रेज़ी सिखाना शुरू किया।

जल्द ही दो से पाँच भिक्षु नियमित रूप से मंदिर में खोज-शैली की बाइबल चर्चाओं के लिए इकट्ठा होने लगे। वे सुनते, प्रश्न पूछते और कहानियों को अपने शब्दों में दोहराते। जब उनसे पूछा गया कि ये कहानियाँ यीशु के बारे में क्या प्रकट करती हैं, तो उन्होंने ऐसे उत्तर दिए: “वह चमत्कार करता है,” “उसके पास दुष्टात्माओं पर

अधिकार है,” और “वह जगत का उद्धारकर्ता है।”

तीन महीने बाद ये बैठकें बिना किसी तात्कालिक कटनी के समाप्त हो गईं। एक भिक्षु ने आखिरकार भिक्षु-जीवन छोड़ दिया और लाओस लौट गया। दूसरे का पहली बार सुसमाचार सुनने के बाद देहांत हो गया। फिर भी बीज विश्वासयोग्यता से बोया गया था।

हर हृदय की भूमि में क्या हुआ, यह केवल परमेश्वर जानता है। यीशु हमें याद दिलाता है कि कुछ बीज अच्छी भूमि पर गिरेंगे और भरपूर फसल लाएँगे। इसलिए हम विश्वास से प्रार्थना करते हैं: “हे प्रभु, बोए गए हर बीज को सींचता रह। हृदयों को कोमल कर, आत्मिक बाधाओं को हटा, और दूसरों को भेज कि वे बोए हुए की देखभाल करें। सुसमाचार के ये बीज गहरी जड़ पकड़ें और तेरे सिद्ध समय में ऐसी कटनी लाएँ जो बहुत से बौद्ध भिक्षुओं को परमेश्वर के राज्य में ले आए।”

प्रार्थना का केंद्र: डैलस

उत्तरी टेक्सास के बौद्ध प्रवासी समुदाय:

प्रार्थना करें कि थाई, श्रीलंकाई, चीनी, वियतनामी और तिब्बती प्रवासी समुदायों के बीच कटनी के मज़दूर भेजे जाएँ। प्रार्थना करें कि वे सांस्कृतिक संवेदनशीलता और सच्चे प्रेम के साथ सुसमाचार सुनाएँ
(1 कुरिन्थियों 9:22)।

अन्य पश्चिमी शहरों के लिए प्रार्थना करें

दूसरे पश्चिमी शहरों के पास भी डैलस जैसा ही अवसर है। कृपया बौद्ध प्रवासी समुदायों वाले 110 शहरों में से इन शहरों के लिए प्रार्थना करें: लंदन, पेरिस, म्यूनिख, दुबई, मास्को और एथेंस।

उत्तरी टेक्सास के बौद्ध प्रवासी समुदाय के बारे में और

उत्तरी टेक्सास संयुक्त राज्य अमेरिका के सबसे बड़े और सबसे विविध बौद्ध प्रवासी समुदायों में से एक का घर है। दशकों के शरणार्थी पुनर्वास और आप्रवासन ने वियतनामी और कंबोडियाई महायान और थेरवाद समुदायों, थाई और श्रीलंकाई मंदिरों, और बढ़ती तिब्बती बौद्ध उपस्थिति को इस फैले हुए महानगर क्षेत्र में ला दिया है। यहाँ एशिया के कुछ सबसे कम पहुँचे गए समुदायों के लोग हमारे निकट पड़ोसी बन गए हैं, और जाति-जाति के लोगों को पूरे उत्तरी टेक्सास की कलीसियाओं के द्वार तक ले आए हैं।

आइए प्रार्थना करें

बौद्ध पृष्ठभूमि वाले मसीही: प्रार्थना करें कि बौद्ध पृष्ठभूमि वाले प्रवासी मसीही, अब जहाँ कहीं भी रहते हों, अपने ही समुदायों को सुसमाचार सुनाएँ (**मरकुस 5:19**)।

स्थानीय कलीसियाएँ: प्रार्थना करें कि पश्चिम की स्थानीय कलीसियाएँ पहचानें कि राज्य उनके द्वार पर रहने वालों के निकट आ गया है, और वे उनके बीच जाकर यीशु का शुभ संदेश सुनाएँ (**लूका 14:23**)।

अमेरिकी शहरों में कटनी: प्रार्थना करें कि अमेरिकी शहरों में प्रवासियों पर केंद्रित सेवकाइयाँ बौद्ध समुदायों के बीच आत्मिक सफलता और चेलों की बढ़ोतरी देखें (**कुलुस्सियों 4:3**)।

शुभ संदेश को अपने देश ले जाना: प्रार्थना करें कि बौद्ध प्रवासी विश्वासी शुभ संदेश को अपने मूल देशों में वापस ले जाएँ, ताकि जिस राज्य से वे यहाँ मिले हैं, वह वहाँ जड़ पकड़े और बढ़े। (**प्रेरितों के काम 11:19-21**)।

जीवन में लागू करें

लूका 10:9b कहता है: “परमेश्वर का राज्य तुम्हारे निकट आ पहुँचा है।” आपके शहर में ऐसा कौन है जिसके निकट राज्य आ गया है, पर जिसने अब तक उसके बारे में सुना नहीं?





दिन 7: 31 जनवरी

विश्व प्रार्थना दिवस:

ऑनलाइन जुड़ें

1/4

जुड़ने के लिए यहाँ क्लिक करें

“क्योंकि पृथ्वी यहोवा की महिमा के ज्ञान से ऐसी भर जाएगी जैसे समुद्र जल से भर जाता है।”
हबक्कुक 2:14 (IRV)

तेरा राज्य आए

छह दिनों की प्रार्थना हमें इस क्षण तक ले आई है। हमने जातियों, स्थानों, आंदोलनों और उन लोगों के लिए प्रार्थना की है जो बौद्ध जगत में सुसमाचार ले जाते हैं। आज, इस विश्व प्रार्थना दिवस पर, हम क्षितिज की ओर अपनी आँखें उठाते हैं और वह प्रार्थना करते हैं जो यीशु ने हमें सिखाई: “तेरा राज्य आए। तेरी इच्छा जैसे स्वर्ग में पूरी होती है, वैसे पृथ्वी पर भी हो।”

बौद्ध जगत में लगभग 50 करोड़ लोग रहते हैं, जिनकी सुसमाचार तक बहुत कम या कोई पहुँच नहीं है। परन्तु यह उनकी कहानी का अन्त नहीं है। हम इसलिए प्रार्थना करते हैं क्योंकि राज्य उसी का है जो था, जो है और जो आने वाला है। हम इसलिए प्रार्थना करते हैं क्योंकि उसने प्रतिज्ञा की है कि “पृथ्वी यहोवा की महिमा

के ज्ञान से ऐसी भर जाएगी जैसे समुद्र जल से भर जाता है।” और हम इसलिए प्रार्थना करते हैं क्योंकि हमें परमेश्वर के दिन के आने का मार्ग तैयार करने में सहायता के लिए आमंत्रित किया गया है **(2 पतरस 3:12)**, और हम विश्वास करते हैं कि सुसमाचार हर उस जनसमूह और हर उस स्थान तक पहुँचेगा जिसने अभी तक नहीं सुना।

आइए हम प्रार्थना के ऐसे जागरण के लिए पुकारें जो बड़े, फैले और पवित्रता, शुद्धता और बुराई से छुटकारे की आग सुलगाए। पूरे बौद्ध जगत में रहने वाले लोगों के लिए परमेश्वर के राज्य के परिवर्तन की भी प्रार्थना करें। “हम भले काम करने में साहस न छोड़ें, क्योंकि यदि हम ढीले न हों, तो ठीक समय पर कटनी काटेंगे।” **(गलातियों 6:9)**

ऑनलाइन जुड़ें

बौद्ध लोगों के लिए एकता में 24 घंटे की प्रार्थना में। या अपने स्थानीय परिवेश में छोटे समूहों में इकट्ठा हों। एक मन होकर की गई संयुक्त प्रार्थना सामर्थी होती है। हम सब से यह भी निवेदन करते हैं कि आज ऐसे पाँच लोगों के लिए नाम लेकर प्रार्थना करें जिन्हें आप जानते हैं और जिन्हें यीशु की आवश्यकता है।

मुख्य शहरों के लिए प्रार्थना

जैसे प्रभु अगुवाई करें, इन शहरों में से एक या दो चुनें और अपने परिवार, कलीसिया या प्रार्थना कक्ष के साथ उन पर ध्यान लगाकर प्रार्थना करें। प्रार्थना करें कि उनमें से हर एक में राज्य के आंदोलन (2414now.net) उभरें। हर शहर के लिए विशेष प्रार्थना विषय और वीडियो संसाधन आपको 110cities.com पर मिलेंगे।

प्रभु की प्रार्थना के द्वारा प्रार्थना

प्रभु की प्रार्थना को एक ढाँचे के रूप में उपयोग करें, ताकि यीशु के अपने शब्द बौद्ध जगत के लिए आपकी मध्यस्थता की प्रार्थना को आकार और दिशा दें।

“हे हमारे पिता, तू जो स्वर्ग में है।” आराधना से आरंभ करें

- परमेश्वर की पिता के रूप में आराधना करें, वह पिता जो स्वर्ग और पृथ्वी के हर घराने का स्वागत करता है (**इफिसियों 3:14**), वह पिता जो अपने बेटे-बेटियों पर भरपूर प्रेम उंडेलता है (**1 यूहन्ना 3:1**), वह पिता जो अपने लोगों के कारण गाकर आनन्द करता है (**सपन्याह 3:17**)। उसकी स्तुति करें कि उसका पितृत्व किसी भौगोलिक या जातीय सीमा को नहीं मानता।

पूरे बौद्ध जगत में परमेश्वर जो पहले से कर रहा है, उसके लिए धन्यवाद दें।

- हम हर उस चेला बनाने वाले के लिए तेरी स्तुति करते हैं जो दिन-प्रतिदिन बौद्ध लोगों को मसीह की आँखों से देखने का चुनाव करता है। धन्यवाद कि तू अपना वचन उन भाषाओं और स्थानों तक ला रहा है जहाँ वह पहले कभी नहीं सुना गया, उन परिवारों के लिए जो पहली बार बाइबल खोल रहे हैं, और यीशु की उन नई संगतियों के लिए जो ऐसे स्थानों में जड़ पकड़ रही हैं जिन्हें कभी सुसमाचार के लिए बंद माना जाता था। महिमा के पिता की स्तुति करें कि उसका राज्य आ रहा है: खमीर के समान चुपचाप और अजेय रूप से। धन्यवाद कि किसी भी देश का कोई भी परिवार उसके प्रेम की पहुँच से बाहर नहीं है (**भजन संहिता 22:27**)।

“तेरा नाम पवित्र माना जाए।” तेरी महिमा पृथ्वी को भर दे

- हे पिता, तेरा नाम, तेरी प्रतिष्ठा, तेरा चरित्र और तेरे काम पूरे बौद्ध जगत में प्रकट हों। बैंकॉक और बीजिंग में, टोक्यो और उलानबातर में, नोम पेन्ह और पेरिस में तेरा नाम पवित्र माना जाए।
- हे पिता, क्या तू बौद्ध भिक्षुओं, सरकारी अगुवों और साधारण परिवारों पर अपनी महिमा प्रकट करेगा? स्वप्न, दर्शन और गवाह भेज। तेरी महिमा का ज्ञान जल के समान फैले, हर नीचे स्थान तक पहुँचे और बौद्ध जगत के हर छिपे कोने को भर दे।
- कृपया चीन की कलीसियाओं में प्रार्थना के लिए जोश फिर से जगा, ताकि हे पिता, तू उस देश में फिर से हर सुबह प्रार्थनाओं की आवाज़ सुने। (**मरकुस 1:35**)

“तेरा राज्य आए।”

बौद्ध जगत में राजा के रूप में राज्य कर

- हे पिता, अपनी पवित्र सामर्थ से बौद्ध लोगों के मन पर छाए आत्मिक अंधेपन को दूर कर, ताकि वे यीशु मसीह के चेहरे में सुसमाचार की ज्योति देख सकें। **(2 कुरिन्थियों 4:4-6)** बौद्ध धर्म दुःख से बचने का एक मार्ग देने का दावा करता है। हम प्रार्थना करते हैं कि करोड़ों लोग उससे मिलें जो केवल एक मार्ग नहीं देता, बल्कि स्वयं “मार्ग और सत्य और जीवन” है।
- प्रार्थना करें कि बौद्ध धर्म की हर धारा में सुसमाचार के आंदोलन बढ़ें: थाईलैंड, म्यांमार, कंबोडिया, लाओस और श्रीलंका के थेरवाद लोग; चीन, वियतनाम, जापान और कोरिया के महायान लोग; भूटान, नेपाल और हिमालय के ऊँचे क्षेत्रों के तिब्बती बौद्ध लोग। माँगें कि चेले चेले बनाएँ और कलीसियाएँ कलीसियाएँ स्थापित करें, जब तक हर जनसमूह के बीच गवाही न हो। **(मत्ती 24:14)**
- प्रार्थना करें कि बौद्ध जगत का हर विश्वासी आत्मा से भर जाए और राज्य की सामर्थ के प्रदर्शन और असाधारण प्रेम के साथ सुसमाचार सुनाने का साहस पाए। हे पिता, इस कठनी के लिए मज़दूर भेज। **(लूका 10:2)**



खुले द्वारों और बदले हुए जीवनों के लिए प्रार्थना करें

- हे पिता, तू नहीं चाहता कि कोई नाश हो, वरन् यह कि सब को मन फिराव का अवसर मिले **(2 पतरस 3:9)**। हम यह प्रार्थना उन सैकड़ों बौद्ध-बहुल जनसमूहों के लिए करते हैं जो अब भी अपहूँचे हैं, जिनमें 2% से भी कम लोग मसीह के पीछे चलते हैं और जिनके पास ऐसी कोई स्थानीय कलीसिया नहीं जो अपने बल पर बाकी लोगों तक पहुँच सके।
- प्रार्थना करें कि बाइबल हर जनसमूह तक उसकी मातृभाषा में पहुँचे। प्रार्थना करें कि परमेश्वर का वचन संसार के सबसे प्रतिबंधित देशों में से एक, उत्तर कोरिया, में सामर्थ के साथ आगे बढ़े। चीन, हांगकांग, ताइवान, मंगोलिया और जापान में उभर रहे युवा जागृति आंदोलनों के लिए प्रार्थना करें। **(प्रेरितों के काम 2:17)**
- बौद्ध-बहुल देशों में मसीह के पीछे चलने के कारण सताव सह रहे हर विश्वासी के लिए बल, धीरज और बढ़ोतरी की प्रार्थना करें। दुःख उठाने वाली कलीसिया ही बढ़ने वाली कलीसिया बने। **(मत्ती 16:18)**

“आज हमें दे।” पाँच लोगों के लिए करुणा से प्रार्थना करें

- रुककर अपने प्रभाव-क्षेत्र के पाँच लोगों के लिए प्रार्थना करें: बौद्ध पड़ोसी, सहकर्मी, सहपाठी या परिजन जो अभी यीशु को नहीं जानते। प्रभु से माँगें कि वह हर एक को अपने साथ व्यक्तिगत भेंट का अनुभव दे। “हे पिता, उन्हें अपने पुत्र की ओर खींच” **(यूहन्ना 12:32)**। “तेरी भलाई उन्हें मन फिराव को सिखाए।” **(रोमियों 2:4)**

“हमें क्षमा कर।” बौद्ध जगत पर क्षमा उंडेल

- हे पिता, मसीह के क्रूस के द्वारा क्षमा की सामर्थ प्रकट कर। जैसे तूने हमें क्षमा किया है, क्या तू उन्हें भी क्षमा करेगा जिन्होंने अब तक तेरा नाम नहीं जाना, “क्योंकि ये जानते नहीं कि क्या कर रहे हैं”।

- प्रार्थना करें कि मेल-मिलाप की सेवा हर बौद्ध देश के टूटे हुए परिवारों तक पहुँचे। **(2 कुरिन्थियों 5:18-19)**
- परिवार के तिरस्कार का सामना कर रहे नए विश्वासियों, आघात और संघर्ष के बाद फिर से खड़े हो रहे समुदायों, और ऐतिहासिक पीड़ा का बोझ अब भी उठा रहे देशों की चंगाई और संपूर्णता के लिए प्रार्थना करें। हे पिता, सुसमाचार की सामर्थ के द्वारा पुनःस्थापना ला। **(योएल 2:25)**

“हमें बचा।” बौद्ध जगत को स्वतंत्र कर

- हे पिता, हर बौद्ध परिवार को उस दुष्ट की पकड़ से छुड़ा: धोखे से, मूर्तिपूजा से, और उस निराशा से जो उद्धारकर्ता के बिना मुक्ति खोजने से आती है। यीशु के सामर्थी नाम के द्वारा आशा और चंगाई उंडेल।
- हे पिता, जाति-जाति के लोगों को अपने पुत्र की मीरास कर दे। **(भजन संहिता 2:8)** तेरी महिमा का ज्ञान इन बौद्ध शहरों पर लहर के समान आए: सब कुछ तेरी महिमा, हमारे आनन्द और बहुतों के उद्धार के लिए।

जीवन में लागू करें

एक प्रतिज्ञा जिसके लिए प्रार्थना करना सार्थक है

हबक्कूक 2:14 कोई प्रार्थना नहीं है। यह एक प्रतिज्ञा है: “पृथ्वी यहोवा की महिमा के ज्ञान से ऐसी भर जाएगी...” प्रश्न यह नहीं कि यह प्रतिज्ञा पूरी होगी या नहीं, बल्कि यह है कि क्या हम उन लोगों में शामिल होना चुनेंगे जो इसके पूरा होने के लिए प्रार्थना करते, विश्वास करते और सहभागी होते हैं।

प्रार्थना के इन सात दिनों के अंत में, बौद्ध जगत के लिए आप प्रार्थना या सहभागिता का कौन-सा एक विशेष और निरंतर कदम उठाने का संकल्प लेंगे? आप तब तक प्रार्थना करते रहने के लिए क्या करेंगे जब तक उसकी महिमा का ज्ञान पृथ्वी को न भर दे?

बौद्ध लोगों के लिए हमारे साथ प्रार्थना करने के लिए धन्यवाद



प्रार्थना की विरासत

ई. एम. बाउंडस ने एक बार लिखा था: **“प्रार्थनाएँ उन्हें करने वालों के जीवन से अधिक समय तक जीवित रहती हैं; वे एक पीढ़ी से, एक युग से, एक संसार से भी अधिक समय तक जीवित रहती हैं।”**

यह कितना सामर्थी स्मरण है कि हमारी प्रार्थनाएँ कभी भी उस क्षण तक सीमित नहीं रहतीं जब हम उन्हें बोलते हैं। जब हम प्रार्थना करते हैं, तो हम परमेश्वर के उद्धार के काम में उसके साथ जुड़ते हैं, ऐसा काम जो हमारी दृष्टि से बहुत आगे तक, और अक्सर हमारे अपने जीवनकाल से भी बहुत आगे तक पहुँचता है।

बौद्ध लोगों के लिए आपकी हर प्रार्थना अनंतकाल में किया गया निवेश है। शायद आप कभी उस व्यक्ति से न मिलें जिसका जीवन आपकी प्रार्थना के कारण बदल गया। शायद आप कभी न जानें कि किस गाँव में कलीसिया स्थापित हुई, किस परिवार की यीशु से भेंट हुई, या किस चेले ने सुसमाचार को अगली पीढ़ी तक पहुँचाया। परन्तु परमेश्वर जानता है। **वह सुनता है, वह याद रखता है, और वह अपने लोगों की प्रार्थनाओं का उपयोग करने में विश्वासयोग्य है।**

हमारी आशा है कि ये सात दिन केवल एक प्रार्थना मार्गदर्शिका से बढ़कर रहे हों। हम प्रार्थना करते हैं कि इनसे एक नियमितता बनी हो: मध्यस्थता की प्रार्थना की ऐसी लय जो इन पन्नों के बंद होने के बहुत बाद तक चलती रहे। ये प्रार्थनाएँ ऐसी विरासत का भाग बनें जो तब तक

आगे बढ़ती रहे जब तक हर बौद्ध जाति को यीशु का शुभ संदेश सुनने और उसका उत्तर देने का अवसर न मिल जाए।

संसार भर में दूसरों के साथ प्रार्थना करने के लिए धन्यवाद। उन लोगों और स्थानों के लिए रस्सी थामे रहने के लिए धन्यवाद जो शायद आपके दैनिक जीवन से दूर हों, पर परमेश्वर के हृदय से कभी दूर नहीं हैं।

प्रभु हर प्रार्थना, हर विनती और विश्वास के हर काम को बढ़ाए, और हम एक दिन बौद्ध लोगों के बीच बड़ी कटनी देखें।

उसका नाम हर जाति के बीच जाना जाए। हर स्थान में उसकी महिमा हो। उसका राज्य आए, और उसकी इच्छा जैसे स्वर्ग में पूरी होती है, वैसे पृथ्वी पर भी हो।

जब तक सब न सुन लें।

यह मार्गदर्शिका इनके सहयोग से संभव हुई:

Beyond, International Prayer Connect (IPC), 110 Cities, 24:14, और संसार भर में बौद्ध लोगों के बीच सेवा करने वाले आंदोलन-अगुवे।



बौद्ध समुदाय

संसार भर में

वास्तविक लोग।
वास्तविक समुदाय।
प्रार्थना करें कि वे यीशु में आशा पाएँ।

 देश	 जनसंख्या 2024	 बौद्ध जनसंख्या	 प्रतिशत
चीन	1,42,50,00,000	23,00,00,000	16.1%
जापान	12,39,00,000	6,95,00,000	56.1%
थाईलैंड	7,16,00,000	6,12,00,000	85.5%
वियतनाम	10,03,00,000	4,90,00,000	48.8%
म्यांमार	5,53,00,000	4,12,00,000	74.5%
श्रीलंका	2,22,00,000	1,51,00,000	68.0%
कंबोडिया	1,71,00,000	1,47,00,000	86.0%
दक्षिण कोरिया	5,16,00,000	1,28,00,000	24.8%
भारत	1,43,00,00,000	1,02,00,000	0.7%
ताइवान	2,35,00,000	62,00,000	26.4%
संयुक्त राज्य अमेरिका	33,50,00,000	46,00,000	1.4%
लाओस	77,00,000	41,00,000	53.2%
नेपाल	3,05,00,000	39,00,000	12.8%
मंगोलिया	35,00,000	20,00,000	57.1%


संसार भर के
बौद्ध लोगों
के लिए प्रार्थना करें

• CV Global के Activation Hubs ऑनलाइन संसाधन केंद्र हैं: cvglobal.co/en/activation-hubs
• Zume Training (zume.training) एक मुफ्त ऑनलाइन चेलापन पाठ्यक्रम है जो साधारण विश्वासियों को ऐसे चले बनाना सिखाता है जो चले बनाएँ। यह पचास से अधिक भाषाओं में उपलब्ध है, जिनमें बौद्ध जगत में बोली जाने वाली कई भाषाएँ भी शामिल हैं।
Copyright 2027 | डिज़ाइन: Shamilla Yeary और Daniel Dunnam • यह मार्गदर्शिका YouVersion बाइबल ऐप पर उपलब्ध है। बाइबल उद्धरण: इंडियन रिवाइज्ड वर्जन (IRV)
हिंदी 2019, Bridge Connectivity Solutions, CC BY-SA 4.0.